Research Kinetics
ISBN: 978-93-93166-23-4

भारत और हिंदमहासागर
India and Indian Ocean

श्रीमती पुष्पा वर्मा
राजनीतिशास्त्र
सहायक आचार्य
आर्य कन्या महाविद्यालय
झाँसी

सारांश

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हिन्द महासागर की आज अत्यधिक उपयोगिता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व हिन्दमहासागर के अधिकांश तटवर्ती क्षेत्रों पर बिट्रेन का नियन्त्रण था और हिन्दमहासागर को बिट्रेन की झील कहकर पुकारा जाता था, द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नौसेना के महत्व में वृद्धि हो जाने से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हिन्दमहासागर का महत्व पहले की तुलना में आज काफी बढ़ गया है।

भारत के लिए हिन्दमहासागर को काकी उपयोगिता है, क्योंकि हिन्दमहासागर ही भारत को दक्षिण पूर्वी एशिया, अफ़्रोका और ऑस्ट्रेलिया से जोड़ता है. भारत के सारे जलमार्ग हिन्दमहासागर से होकर गुजरते है। भारत की जलीय सुरक्षा हिन्दमहासागर की शांति

पर आधारित है। भोगोलिक दृष्टि से हिन्दमहासागर 10.400 कि०मी० लम्बे और 1.600 कि०मी० चौडे क्षेत्र में फैला हुआ है, इस विशाल लक्षेत्र में सामरिक दृष्टि से विश्व के अनेक महत्वपूर्ण द्वीप मैडागास्कर, मॉरीशस, अंडमान निकोबार, अलक्षात लक्षद्वीप क्रिसमस, मालद्वीप आदि बसे हुए हैं. हिन्दमहासागर का जल एशिया, अफ्रीज तथा आलिया के तटों को छूता है। इसके हो मलक्का जलडमरूमध्य तथा स्वेजनहर के माध्यम से प्रशांत आंध्र हिन्दमहासागर से भी यह सम्बन्धित है |

दियागोगार्शिया' हिन्दमहासागर में स्थित है, यह दीघ्र अंग्रेजी के B अक्षर के आकार का है, उसकी दोनो बाँहे लगभग 40 मी० लम्बी और चौडाई आधा मील है। अमेरिका वियागोगार्शिया द्वीप पर अपने सैन्य अड्डे के विस्तार की योजन को तेजी से क्रियान्वित कर रहा है। उसकी इच्छा है कि यह दियागो गार्शिया सैनिक अड़के को बी-52 समर्थकों को उतारने के योग्य बनाए और इसके लिए राम्र विपुल मनराशे खर्च करने की योजना बना रहा है। अमेरिका पत्रिका स्ट्रेटेजिक रिव्यू Strategic Review के अनुसार नियागोगाशिया की हवाई पट्टी B.0C0 फुट के स्थान पर 12.000 फुट लंबी बनाई गई है। यहां पानी को 45 फुट गहरा बनाया गया है, इससे नौसिक दस्तों के लिए अब आसानी हो गई है।

दियागोगार्शिया पर आणविक शक्ति चालित विमान वाहक हजार बैरल तेल एकत्रित 6 लाख 4D. करने के लिए आत भंडारण और इलैक्ट्रोनिक संचार केन्द्र स्थापित करने की दिशा में अमेरिका तेजी से काम कर रहा था। 1975 में किये गये अध्ययन के अनुसार एक नी सैनिक इकाई का मूल्य 5 से 8 लाख डॉलर होगा और इसके चलाने पर 80 करोड़ डालर खर्च आयेगा।

"हिन्दमहासागर और दियागोगार्शिया में अमरीकी उपस्थिति का एक ही कारण है कि वह हिन्दमहासागर में आकर सोवियत संघ द्वारा अफगानिस्तान में हस्तक्षेप के लाभ को कम करना चाहता है।"

दियागोगार्शिया पर विट्रेन का अधिकार विवादास्पत है। मॉरीशस की मान्यता है कि 1965 ई० में इस द्वीप का हस्तानान्तरण विट्रेन के इस आश्वासन के साथ किया गया था कि वहां केवल विट्रेन का एक संचार केन्द्र होगा। लेकिन विट्रेन ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि दियागोगार्शिया' अमेरिका को सुपुर्द कर दिया गया। मॉरीशस ने यह दावा किया कि हस्तांतरण में यह शर्ते भी थी कि यदि विट्रेन को इस द्वीप की आवश्यकता नहीं रही तो उसे मारीशस को लौटा दिया जायेगा। आज यह द्वीप मारीशस के लिए प्राकृतिक संसाधन की दृष्टि से राष्ट्रीय महत्व का से है।

आज विश्व के अधिकांश देशों ने जैसे श्रीलंका, तंजानिया,

इराक, वर्मा, दक्षिणी यमन, भारत तथा मारीशस में इस द्वीप में बाहर शक्यिों की उपस्थिति का विरोध करते हुए इसे शांति क्षेत्र बनाने का पूर्ण समर्थन किया है। अमेरिका की दियागोगार्शिया में जैसे-2 पकड़ तेज होती जा रही है, भारत की चिता बढ़ रही है क्योकि दियागोगार्शिया भारत के दक्षिणी तट से सिर्फ 1,000 मील दूर है और हिन्दमहासागर में बसे अन्य द्वीप भी यहां से नियंत्रित किये जा सकते है।

1993 में पंजाब विश्वविद्यालय के राजनीति केन्द्र पर दक्षिण पूर्वी हिन्दमहासागर के भू राजनीतिक पहलू के विषय पर आयोजित की गई विचार गोष्ठी में बोलते हुए भारत के विदेश विभाग के राज्यमंत्री श्री रघुनन्दन लाल भाटिया ने हिन्दमहासागर के देशो, विशेषकर दक्षिणपूर्वी हिन्दमहासागर के देशों के सम्बन्ध में यह विचार व्यक्त किया कि इनमें उच्चस्तरीय आर्थिक सहयोग होना चाहिए, आर्थिक समृद्धि की राजनीति ही स्थायित्व को दृढ कर सकती है।

भारत की विदेश नीति अब हिन्दमहासागर के देशों, विशेषकर दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों के साथ अधिक विस्तृत आर्थिक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न कर रही है, हिन्दमहासागर के क्षेत्र की सुरक्षा के लिए अब यह आवश्यक हो गया है कि इसके तटीय देशों व प्रदेशों में आपसी आर्थिक सहयोग में विशेष वृद्धि हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. *अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति गांधी जी राय*
2. *पेरेज द कुइयार 584, यासिक अराफात 584*
3. *अफ्रीकी एकता संघ- 585, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति यू.आर. घई, वी. घई 421*